महाशिवरात्रि - धार्मिक एकता एवं सद्भावना का त्यौहार

भारत एक बहुआयामी सांस्कृतिक विरासत का संवाहक अद्वितीय देश है। प्रत्येक धर्मों में मनाये जाने वाले त्योहार, धार्मिक परम्पराएं, रीति-रिवाज एवं जयन्तियां, मनुष्य को किसी न किसी रूप से आध्यात्मिक सत्ता से जोड़ती हैं। शायद इसी कारण से इस अति भौतिकवादी संस्कृति और भाग्यविधाता विज्ञान के युग में भी ईश्वर की सत्ता विविध रूपों में स्वीकार्य है। परन्तु कालान्तर में जब लोगों में श्रद्धा एवं स्नेह का क्षरण होने लगता है तो इनमें निहित आध्यात्मिक सत्य का स्थान कर्मकाण्ड एवं अनौपचारिकता ले लेती हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज पर्व औपचारिकता को निभाने के लिए मनाएं जाते हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इन त्योहारों के पीछे छिपे आध्यात्मिक सत्य का उद्घाटन करने की आवश्यकता है जिससे इस संसार में व्याप्त अज्ञानता और तमोप्रधानता को दूर करके मनुष्य-सभ्यता को यथार्थ मार्ग दिखाया जा सके।

शिवलिंग - परमात्मा की यादगार:- विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी तथ्य परमात्मा के सम्बन्ध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के सम्बन्ध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और वितृष्णा का जन्म हुआ। यह संसार भ्रम सागर बन गया। परन्तु इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है। वह यह कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैः इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। भारत और भारत के बाहर देवालयों में स्थापित शिवलिंग परमात्मा के ज्योति स्वरूप की यादगार हैं। शिवलिंग का आकार कोई मानवीय शरीर नहीं होता है। भाषिक विवेचन के अनुसार शिव का अर्थ कल्याणकारी और लिंग का अर्थ चिन्ह होता है। अतः शिवलिंग किसी एक विशेष धर्म के लिए आराध्य-प्रतीक नहीं, बल्कि परमात्मा तो सर्व मनुष्यात्माओं का चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ण अथवा कर्म से सम्बन्धित हो, सभी का आराध्य है। परमात्मा के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों में प्रचलित नूर, डिवाइन लाइट, ओंकार और ज्योर्तिस्वरूप भाषा के स्तर पर ही भिन्न हैं। भाव अर्थात् स्वरूप के स्तर पर नहीं। अतः शिवलिंग अर्थात् सर्वात्माओं के कल्याणकारी ज्योर्तिबिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव की प्रतिमा।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य:- प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन मास की अमावस्या के एक दिन पूर्व बड़ी ही आस्था के साथ मनाया जाता है। इस दिन शिवलिंग की विशेष आराधना की जाती है एवं इस पर बेल-पत्र, धतूरा, जल, बेर इत्यादि फल-फूल चढ़ाये जाते हैं। भक्त जन अखाद्य पदार्थ जैसे भांग एवं गाजा का सेवन प्रसाद के रूप में करते हैं। इस दिन शिव की बारात भी निकाली जाती है जिसमें सभी प्रकार के व्यक्ति और प्राणी सम्मिलित होते हैं। महाशिवरात्रि के अवसर पर व्रत करने तथा रात्रि में जागरण करके आराधना करने की भी परम्परा भक्तजनों में प्रचलित है।

परन्तु शिव कौन हैं? शिव के लिए लिंग या ज्योतिर्लिंग शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है? शिव के साथ रात्रि का क्या सम्बन्ध है? कृष्ण के साथ अष्टमी और राम के साथ नवमी तिथि जुड़ी हुई है परन्तु शिव के साथ रात्रि ही जुड़ी है, कोई तिथि क्यों नहीं जुड़ी है? शिव के साथ शालिग्राम कौन हैं? अन्य

सभी देवताओं पर अच्छे और स्वादिष्ट प्रसाद चढ़ाये जाते हैं परन्तु शिव पर अक का फूल और धतूरा ही क्यों चढ़ाया जाता है। क्योंकि शिव की मूर्ति शरीर रहित है परन्तु उनका वाहन नन्दी शरीरधारी क्यों है? इत्यादि शिवरात्रि से जुड़े प्रश्नों पर विवेकयुक्त और यथार्थ ढंग से वर्तमान परिस्थितियों में चिन्तन करने की आवश्यकता है। तभी महाशिवरात्रि के पर्व को यथार्थ ढंग से मनाकर संसार को सही दिशा दी जा सकती है एवं मानव मन में व्याप्त अज्ञानता और तमोगुणी आसुरी संस्कारों का शमन किया जा सकता है।

महाशिवरात्रि के सम्बन्ध में सबसे अनोखी बात यह है कि इसका सम्बन्ध निराकार, अशरीरी परमात्मा से है। जबकि अन्य सभी त्योहारों, पर्वों अथवा जयन्तियों का देवताओं, पौराणिक महापुरुषों के जीवन से सम्बन्ध होता है। अतः शिवरात्रि परमात्मा शिव के इस धरा पर अवतरण की यादगार है। परमात्मा शिव, सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हैं और जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त है। गीता में भगवान ने इस सम्बन्ध में कहा है - जो मुझे मनुष्यों की भांति जन्म लेने और मरने वाला समझते हैं वे मूढ़मति हैं (अध्याय 6, श्लोक 24, 25)। पुनः वे कहते हैं - मेरे दिव्य जन्म के रहस्य को न महर्षि, न देवता जानते हैं (अध्याय 10, श्लोक 2)। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा प्रकृति के तत्वों के अधीन कोई सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हो सकता है। प्रायः सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से परमात्मा को ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप और अशरीरी तथा जन्म-मरण रहित तो स्वीकार करते ही हैं। अतः शिव का अन्य भाषान्तर गॉड, खुदा ओंकार इत्यादि है और शिव रात्रि परमात्मा के दिव्य-अवतरण दिवस की यादगार है।

<u>शिव के साथ रात्रि का सम्बन्धः-</u> यह तो सभी धर्मानुयाई मानते ही हैं कि परमात्मा का अवतरण पापाचार, अधर्म और अज्ञानता का विनाश करके सत्य धर्म की स्थापना करने के महान कर्म के निमित्त ही होता है। परमात्मा के अवतरण के काल और कर्म के सम्बन्ध में गीता में कहा गया हैः

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजहम्यहम् ।। अध्याय 4, श्लोक-7)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (अध्याय 4, श्लोक-8)

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोडर्जुन।। (अध्याय-4, श्लोक-9)

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा का दिव्य-अलौकिक जन्म, धर्म ग्लानि के समय अधर्म के विनाश के लिए होता है। यदि वर्तमान सांसारिक परिदृश्य का अवलोकन करें तो चारों ओर व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबा समाज अधर्म और धर्मग्लानि का ही समय है। जिस समाज में भ्रष्टाचार। जीवन में शिष्टाचार बन गया हो, उसे धर्म ग्लानि का काल नहीं तो और क्या सम्बोधित कर सकते हैं? तो शिव के साथ रात्रि का जो सम्बन्ध है, वह परमात्मा शिव के घोर पापाचार और वर्तमान तमोप्रधान कलियुग में अवतरण की यादगार है। वैसे भी भारतीय दर्शन में रात्रि शब्द अज्ञानता और विनाशकाल का सूचक है। मनु ने कहा है - आसीदिदं तमोभूतम् प्रज्ञानम् लक्षणम्। अतः फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या त्रयोदशी रात्रि को मनाई जाने वाली शिवरात्रि महाविनाश से

थोड़े समय पूर्व परमात्मा के दिव्य अवतरण की यादगार है। ऐसे ही समय में जब ईश्वरीय ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है, तब ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा शिव अधर्म का विनाश करके सत्य धर्म की स्थापना करने के लिए अवतरित होते हैं।

शिवरात्रि का रहस्यः- शिवरात्रि के दिन भक्तगण शिवलिंग पर धतूरा, बेर, बेलपत्र इत्यादि चढ़ाते हैं, रात्रि जागरण करते हैं एवं अन्न का व्रत रखते हैं। परन्तु वास्तव में परमात्मा शिव पर यथार्थ रूप से क्या चढ़ाना चाहिए और किस प्रकार से व्रत का पालन करना चाहिए, इसके आध्यात्मिक रहस्य को समझने की आवश्यकता है। तभी स्वयं का और सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है। धतूरा-विकार का, बेर-नफरत-घृणा का और बेल-पत्र-बुराइयों का प्रतीक है। अतः हमें परमात्मा शिव पर विकारों, विषय-वासना एवं बुरी आदतों को चढ़ाना चाहिए अर्थात् त्याग करना चाहिए। वास्तव में शिवरात्रि वर्तमान कलियुग के अन्त और सतयुग के प्रारम्भ में बीच के समय संगमयुग का नाम है, जब स्वयं निराकार परमपिता शिव, साकार मानव-तन प्रजापिता ब्रह्मा (पौराणिक नाम नन्दीगण) के तन में अवतरित होकर मनुष्यात्माओं से विकारों और बुराइयों का, ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर त्याग कराते हैं। अतः शिवरात्रि पर विकारों एवं बुराइयों से व्रत रखें। रात्रि जागरण का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव के वर्तमान समय के अवतरण के काल में हम अपनी आत्मा की ज्योति को जगायें, अज्ञान-निद्रा में सो न जायें। शिव की बारात का आध्यात्मिक रहस्य यह है परमात्मा शिव मनुष्य आत्माओं को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त, सृष्टि चक्र, कर्मों की यथार्थ समझ एवं गहन गति का ज्ञान देकर अपने निवास स्थान - परमधाम ले जाते हैं। वास्तव में बहुरूपी बाराती मनुष्य के विकृत सूक्ष्म संस्कारों का शास्त्रीय रूपक चित्रण हैं। अतः शिवरात्रि के महात्म्य और आध्यात्मिक रहस्य को यथार्थ रीति से समझकर मनाने से ही सर्व मनुष्यात्माओं और संसार का कल्याण हो सकता है।

सर्व मनुष्यात्माओं प्रति ईश्वरीय सन्देशः- वर्तमान तमोप्रधान धर्म ग्लानि के समय में निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव को इस धरा पर अवतरित हुए 67 वर्ष हो चुके हैं। परमात्मा शिव अनेक आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन करके सत्य धर्म की स्थापना का दिव्य-कर्म कर रहे हैं। एक ओर इस पुरानी-पतित दुनिया के विनाश के लिए महाप्रलयंकारी आणविक अस्त्रों का जखीरा तैयार हो चुका है तो दूसरी ओर प्राकृतिक शक्तियां भी उग्र स्वरूप प्रदर्शित कर रही हैं जिसके फलस्वरूप जीवनरक्षक परत-ओजोन का क्षरण, तापक्रम में वृद्धि, मौसम में परिवर्तन, भूकम्प इत्यादि प्राकृतिक आपदाएं अस्तित्व में आ रही हैं। ये पुरानी दुनिया के अन्त का स्पष्ट संकेत हैं, महज प्रकृति के अन्दर घटित होने वाली सामान्य घटनाएं नहीं हैं। अतः सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमन्त्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव तथा स्वयं को यथार्थ रीति से पहचान कर निकट भविष्य में आने वाली नई सतयुगी दैवी-संस्कृति प्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझकर अपने तमोगुणी स्वभाव और संस्कारों का त्याग करके, स्वयं के जीवन में तथा इस सृष्टि में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के मंगलमय तत्व का संचार करें।

ओम् शान्ति